दैनिक भास्कर
अजमेर 26-07-2021

भास्कर खास • दोनों संस्थानों में हुआ एमओयू, शिक्षा और प्रसार को भी बढ़ाएंगे

बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र और जोधपुर के कृषि विवि मिलकर करेंगे अनुसंधान

सिटी रिपोर्टर | अजमेर

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र तबीजी और कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर अब मिलकर अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में परस्पर सहयोग करेंगे। विशेषकर मारवाड़ की प्रमुख फसल जीरा में नए अनुसंधान और किस्म विकसित किए जाने की दिशा में कार्य होगा। रविवार को दोनों संस्थानों के बीच इसे लेकर एक एमओयू हुआ है। एमओयू पर कुलपति प्रो. बीआर चौधरी तथा केंद्र के निदेशक डॉ एसएन. सक्सेना ने हस्ताक्षर किये। बीजीय मसाला

अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एसएन. सक्सेना ने बताया कि इस एमओयू का प्रमुख उद्देश्य बीजीय मसाला उत्पादन के क्षेत्र में परस्पर अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार को बढ़ाना है।

नवीन शोध एवं तकनीकों के हस्तांतरण, विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के क्रियान्वयन, बीजीय मसालों की उत्पादकता तथा उत्पादन वृद्धि पर आपसी सहयोग किया जाएगा। बीजीय मसालों की विभिन्न किस्मों के जर्मप्लाज्म के वैज्ञानिक संरक्षण, विश्वविद्यालय के प्रसार केन्द्रों के उन्नयन के लिए नवीन तकनीकों के हस्तांतरण के लिए कार्य होंगे। साथ ही विश्व विद्यालय के शोधार्थी केन्द्र की उत्कृष्ट प्रयोगशालाओं एवं प्रक्षेत्र फार्म पर बीजीय मसालों पर शोध का लाभ प्राप्त कर सकेगें।

जीरे की नई किस्म का विकास

बीजीय मसालों में जीरा मारवाड़ की एक महत्वपूर्ण फसल है। वर्ष 2004 में जीरे की विकसित किस्म जी.सी 4 के पश्चात इससे अन्य कोई अच्छी किस्म आज तक विकसित नहीं हो पाई है। इन दोनों संस्थानों के परस्पर एमओयू होने से जीरे की नई किस्म विकसित किये जाने के लिए एक नई दिशा मिलेगी, जिससे इस क्षेत्र के जीरा उत्पादक किसानों की उत्पादकता तथा आय में बढ़ोतरी हो सकेगी। पीआरओ जी के त्रिपाठी ने बताया कि इस अवसर पर डॉ भारत सिंह भीमावत, डॉ ईश्वर सिंह, डॉ सीताराम कुम्हार, तथा डॉ एम.एल. मेहरिया उपस्थित रहे।

जीरे की नई किस्म तैयार करने के लिए एमओयू

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अजमेर. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी अजमेर एवं कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के मध्य हुए एमओयू से जीरे की नई किस्म तैयार होने की संभावना है। खासकर मसाला उत्पादन के साथ अनुसंधान, शिक्षा एवं इनके प्रसार के लिए करार भविष्य में फायदेमंद साबित होगा। अजमेर के राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.एन. सक्सेना एवं

एमओयू करते एनआरसीएसके निदेशक एवं कृषि विविजोधपुरके कुलपति।

जोधपुर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. चौधरी ने करार पर हस्ताक्षर किए हैं। डॉ. सक्सेना ने बताया कि इसका मकसद बीजीय मसाला उत्पादन के क्षेत्र में परस्पर अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार को बढ़ाना है।

इन पर होगा काम

एमओयू में नवीन शोध एवं तकनीक के हस्तांतरण, विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के क्रियान्वयन, बीजीय मसालों की उत्पादकता तथा उत्पादन वृद्धि पर आपसी सहयोग, बीजीय मसालों की विभिन्न किस्मों के जर्मप्लाज्म के वैज्ञानिक संरक्षण, विश्वविद्यालय के प्रसार केन्द्रों के उन्नयन के लिए नवीन तकनीकी के हस्तांतरण, प्रक्षेत्र फार्म पर बीजीय मसालों पर शोध का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। जी.के. त्रिपाठी ने बताया कि इस मौके पर डॉ. भारत सिंह भीमावत, डॉ ईश्वर सिंह, डॉ. सीताराम कुम्हार, डॉ. एम.एल. मेहरिया, उपस्थित रहे।

जीरा उत्पादन व आय में होगी बढ़ोतरी

बीजीय मसालों में जीरा मारवाड़ की एक महत्वपूर्ण फसल है। वर्ष 2004 मे जीरे की विकसित किस्म जी.सी 4 के बाद इससे अन्य कोई अच्छी किस्म विकसित नहीं हो सकी है। इन दोनों संस्थानों के परस्पर एमओयू होने से जीरे की नई किस्म विकसित किए जाने के लिए एक नई दिशा मिलेगी। जिससे जीरा उत्पादक किसानों की उत्पादकता तथा आय में बढ़ोतरी हो सकेगी।

एनआरसीएसए स ने तैयार की बीजीय मसालों की खेप

कोरोना में 1400 करोड़ बढ़ा मसाला निर्यात

पीयूष शर्मा

जयपुर। कोविड-19 संक्रमण के बाद इम्युनिटी बढ़ाने के लिए देश-विदेश में बीजीय मसालों की खपत में वृद्धि हुई है। बीजीय मसालों की बढ़ती खपत के चलते एक साल के भीतर ही बीजीय मसाला फसलों के निर्यात में करीब 1400 करोड़ रूपए की बढौत्तरी दर्ज हुई है। निर्यात में बढौत्तरी होना किसानों के लिए खुशखबरी जैसा है। लेकिन, इस खुशी को दोगुना करने का काम किया है राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों ने। केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा विकसित बीजीय मसालों की तीन किस्मों को राष्ट्रीय स्तर पर अधिसूचित किया गया है। वहीं, एक किस्म राज्यस्तर पर नोटिफाइड़ हुई है। इससे कहा जा सकता है कि शोध और अनुसंधान के बलबूते प्रदेश बीजीय मसाला किस्मों की जन्मभूमि बन चुका है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि बीजीय मसालों की मांग में लगातार बढौत्तरी देखने को मिल रही है। इससे किसान आय बढने की बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। हालात यह है कि मांग ज्यादा है और उत्पादन का आंकड़ा कम है। प्रदेश में बीजीय मसालों की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए नये किसानों को जोड़ा जा रहा है। वहीं, बीजीय मसाला उत्पादक किसानों को जैविक तौर-तरीके से मसाला फसलों के उत्पादन से जोड़ा जा रहा है। ताकि, बीजीय मसालों के निर्यात के आंकड़े को और बढ़ाया जा सके। उल्लेखनीय है कि मसाला केन्द्र द्वारा विकसित अजवाइन, सेलेरी, कलौंजी किस्म राष्ट्रीय और हरा धनिया किस्म राज्यस्तर पर हाल ही में नोटिफाइड़ हुई है। केन्द्र के निदेशक डॉ. एसएन सक्सेना ने बताया कि बीजीय मसालों में जीरे का बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रदेश में होता है। इसलिए इस फसल के एक्सपोर्टर सीधे किसानों के सम्पर्क में रहते है। जबकि, कलौंजी, अजवाइन की खपत स्थानीय स्तर पर हो जाती है। किसानों के लिए नई फसल

है सेलेरी। इसके विपणन में अभी किसानों को परेशानी उठानी पड़ रही है। लेकिन, समय के साथ इस फसल का रकबा बढ़ रहा है। इसको देखते हुए ज्यादा उत्पादन देने वाली सेलेरी किस्म का विकास भी केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। ताकि, किसानों की आय में बढौत्तरी हो सके।

क्या है सेलेरी

केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. अरविंद के वर्मा ने बताया कि देसी खान-पान में सेलेरी का उपयोग प्रदेश में कम है। लेकिन, पांच सितारा होटल के साथ-साथ विदेशों में इसे सलाद, सूप और कुकीज आइटम तैयार करने के काम लिया जाता है। पहले इसका उत्पादन पंजाब में होता था । लेकिन, उत्तरप्रदेश, हरियाणा के साथ-साथ प्रदेश के कुछ किसान इसके उत्पादन से जुड़ चुके है।

कोरोना ने बढ़ा दिया निर्यात

उन्होंने बताया कि कोविड-19 सं मण से बचाव के लिए सरकार द्वारा सुझाए गए काढ़ों में अजवाइन, जीरा आदि बीजीय मसालों का प्रयोग हो रहा है। इसके चलते इन फसलों के निर्यात में बढौतरी हुई हैं। एपिड़ा के अनुसार वर्ष 2019-20 के दौरान 4293 करोड़ रूपए के बीजीय मसालों का निर्यात हुआ था। कोविड-19 सं मण के बाद निर्यात का आंकड़ा बढ़कर 5600 करोड़ हो गया है। बढते निर्यात से किसानों को भी बेहतर आय प्राप्त होने लगी है।

देसी मसालों के मुरीद देश

भारतीय मसालों का अमेरिका बड़ा मुरीद है। सबसे ज्यादा मसालों का निर्यात इस देश को होता है। इसके बाद चाइना दूसरे नम्बर पर है। वियतनाम तीसरे और थाईलैंड बीजीय मसालों का चौथा बड़ा आयातक देश है।

मसालों में प्रदेश का दबदबा

जीरा, मैथी और धनिया के उत्पादन में राजस्थान का दबदबा पूरे देश में है। बात करें जीरे की तो 5 लाख हैक्टयर से अधिक क्षेत्रफल में इस फसल की बुवाई होती है। जबकि उत्पादन और उत्पादकता के मामले में गुजरात शीर्ष पर है। वहीं मेथी के बुवाई क्षेत्र और उत्पादन में प्रदेश शीर्ष पर है। इसी तरह वर्ष 2014 के बाद से मध्यप्रदेश धनिया उत्पादन में नम्बर वन बन चुका है।

यह किस्में हुई अधिसूचित

अजमेर सेलेरी-2 (एसीएल-2):-इस किस्म को चयन विधि के माध्यम से विकसित किया गया है। यह ओस के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखती है। यह 120-125 दिन में पककर तैयार हो जाती है। प्रति हैक्टयर इस किस्म की औसत उत्पादकता 874.3 किलोग्राम है। इसके बीजों में एसेंशियल ऑयल की मात्रा 6.74 प्रतिशत है।

अजमेर हरा धनिया-1 :- इस किस्म को आवर्तक चयन विधि के माध्यम से वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। इस किस्म को विशेषकर हरा धनिया के लिए ही विकसित किया गया है। किसान ऑफ सीजन में इसका उत्पादन ले सकते है। इसके पौधे लम्बे, बीज मध्यम आकार का अंडाकार होता है। इस कारण यह निर्यात योग्य किस्म है। इसकी हरी पत्ती में 0.05 प्रतिशत और बीजों में 0.36 प्रतिशत तेल होता है। बुवाई के 50-60 दिन बाद किसान को पहली कटाई मिलती है। रबी में इसकी औसत उपज 74.3 क्विंटल(हरी पत्ती) प्रति हैक्टयर देती हैं। यह किस्म स्टेम पित प्रतिरोधी और खस्ता फफूंदी के प्रति सहनशील है।

अजमेर कलौंजी-1:- स्थानीय संग्रहों से सामूहिक चयन पद्धति के माध्यम से किस्म विकसित की गई है। यह अर्ध-शुष्क क्षेत्र की सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की ऊंचाई 9. 32 सेमी और पकाव अवधि 91-95 दिन है। यह किस्म जड़ सडन प्रतिरोधी है। इसके प्रत्येक कैप्सूल में 65 बीज होते हैं। प्रति हैक्टयर औसत उपज 8-8.5 क्विंटल है। इस के बीजों में लगभग 0.7 प्रतिशत आवश्यक तेल होता है।

अजमेर अजवाईन-73:- सामूहिक चयन विधि द्वारा विविधता का विकास किया गया। यह 120-130 दिनों में पक जाती है। यह राजस्थान के सभी भागों के लिए उपयुक्त है। इस अजवाईन किस्म की औसत उपज 10-12 क्विंटल प्रति हैक्टयर है। इसकी बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर का पहला सप्ताह और जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के मध्य तक है। इस किस्म के बीजों में 93 प्रतिशत आवश्यक तेल होता है।

अजमेर हरा धनिया-1 पहली ऐसी किस्म है, जिससे ऑफ सीजन में हरी पत्ती के उद्देश्य से उगाया जा सकता है। बीजीय मसालों के बढ़ते निर्यात से प्रदेश के साथ देश के दूसरे मसाला उत्पादक किसानों की आय में वृद्धि की बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। संस्थान किसानों को नये बीजों के साथ उन्नत तकनीक भी उपलब्ध करा रहा है।

डॉ. एसएन सक्सेना, निदेशक,
एनआरसीएसएस, अजमेर